दिनांक 2-09-1975 की अव्यक्त वाणी पर आधारित मुरली कविता

दिल रूपी तख्त-नशीन ही सतयुगी विश्व के राज्य का अधिकारी

अपने मन बुद्धि के अन्दर आत्म स्मृति जगाओ
भृकुटि अकाल तख्त पर विराजमान हो जाओ

सबकी सेवा करने का हर पल चलता रहे विचार
अचल अथक सेवाधारी का जगाए रखो संस्कार

संकल्पों में तुम जितनी सच्चाई सफाई लाओगे
उतना सहज रूप से दिलतख्त बाप का पाओगे

प्रकृति पर भी जमाओ अपना पूरा ही अधिकार
विश्वराज्य का तख्त पाने का स्वप्न होगा साकार

चिल्ला चिल्लाकर भक्त आपको लगा रहे पुकार
महादानी वरदानी आत्माओं सुनो हमारी पुकार

प्रकृति पूछ रही हमारी सेवा कब स्वीकार करोगे
हे सतोप्रधान मालिक हम पर राज्य कब करोगे

बापदादा भी पूछ रहे संगमयुग ही तुम्हें भाता है
वापस घर भी चलना है क्या याद नहीं आता है

एक सेकण्ड के आर्डर पर ही साथ चलना होगा
अष्ट रत्न बनना है तो एवररेडी भी बनना होगा

समेटने की शक्ति का निरन्तर अभ्यास बढ़ाओ
एक बल और एक भरोसा मन बुद्धि में जमाओ

अपने न्यायाधीश बनकर हर कमजोरी मिटाओ
योद्धा बनने के बजाए खुद को विजयी बनाओ